तर्ज़ - आवाज़ देके हमें तुम बुलाओ

जो दर तेरे गुज़रे वो जीवन मुबारक
जो सिमरन में बीते वो पल छिन मुबारक

हो विश्वास पूरा सबर करते जायें
हर इक हाल में हम शुकर करते जायें
रजा में तेरी ये समरपण मुबारक
जो सिमरन में बीते

हो एहसास ऐसा रहे तुझमें मिल के
कि बोलों से ज़्यादा करम से तू झलके
हरेक में तेरा ही ये दर्शन मुबारक
जो सिमरन में बीते

है अरदास सतगुरु दया हम पे कर दो
कि गौरव बने इस मिशन के ये वर दो
जियें ऐसे दिलवर हो जीवन मुबारक
जो सिमरन में बीते वो पल छिन मुबारक